



दैनिक संपादकीय विश्लेषण

विषय

विद्यालयों में जनरेटिव एआई: प्रतिबंधित करें, विनियमित करें या एकीकृत करें?

विद्यालयों में जनरेटिव एआई: प्रतिबंधित करें, विनियमित करें या एकीकृत करें?

सन्दर्भ

- न्यूयॉर्क शहर के मेयर ने वर्ष 2026–27 के दौरान कक्षा 8 तक के सार्वजनिक विद्यालय के विद्यार्थियों के लिए अधिकांश जनरेटिव एआई उपकरणों पर एक वर्ष की रोक की घोषणा की है। इसका कारण स्वतंत्र सोच और मानवीय जुड़ाव को लेकर व्यक्त की गई चिंताएँ हैं।
- यह बहस भारत के लिए भी समान रूप से प्रासंगिक है, क्योंकि विद्यालय एआई के प्रयोग के साथ प्रयोग कर रहे हैं।

जनरेटिव एआई क्या है?

- जनरेटिव आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (GenAI) से आशय ऐसे एआई तंत्रों से है जो उपयोगकर्ता के निर्देशों के आधार पर नया पाठ, चित्र, ऑडियो, वीडियो, कोड या अन्य सामग्री तैयार करने में सक्षम होते हैं।
- लार्ज लैंग्वेज मॉडल (LLMs) जैसे ChatGPT और Gemini अवधारणाओं को समझा सकते हैं, प्रश्न तैयार कर सकते हैं, सीखने को व्यक्तिगत बना सकते हैं और शिक्षकों की सहायता कर सकते हैं।
- GenAI पारंपरिक डिजिटल शिक्षण उपकरणों के विपरीत गतिशील रूप से उत्तर तैयार कर सकता है।
- यही इसे शक्तिशाली बनाता है, लेकिन इससे संज्ञानात्मक विकास, सटीकता, निजता, पूर्वाग्रह, शैक्षणिक ईमानदारी और अत्यधिक निर्भरता को लेकर भी प्रश्न उठते हैं।

विद्यालयों में GenAI: वैश्विक और भारतीय परिप्रेक्ष्य

- विश्व स्तर पर, शिक्षा प्रणालियाँ उत्साह से आगे बढ़कर सुरक्षा-उपायों और जिम्मेदार एकीकरण की ओर बढ़ रही हैं।
- यूनेस्को मानव-केंद्रित दृष्टिकोण की सिफारिश करता है, जबकि ओईसीडी (OECD) इस बात पर जोर देता है कि डिजिटल प्रौद्योगिकियों को शिक्षण और अधिगम की गुणवत्ता में सुधार करना चाहिए, न कि उसे कमजोर करना चाहिए।
- Kahoot! और Quizlet जैसे उपकरणों का उपयोग करने वाले शिक्षक सीखने को केवल रटने पर आधारित होने के बजाय खेल-आधारित, संवादात्मक और इंद्रिय-आधारित बना सकते हैं।
- एआई कहानियाँ, कार्यपत्रक, प्रश्नोत्तरी और अलग-अलग स्तर के विद्यार्थियों के अनुरूप मूल्यांकन तैयार कर सकता है।
- इसी प्रकार, Seesaw जैसे मंच लेखन, वीडियो और चिंतन के माध्यम से बच्चों के सीखने को दर्ज कर सकते हैं।
- भारत में, सरकारें सरकारी और ग्रामीण विद्यालयों में एआई के प्रायोगिक कार्यक्रमों की संभावनाएँ तलाश रही हैं, विशेष रूप से वहाँ जहाँ गुणवत्तापूर्ण शिक्षकों और शिक्षण संसाधनों की कमी बनी हुई है।
- हालाँकि, नीति अभी एक व्यापक एकल ढाँचे पर आधारित होने के बजाय क्रमिक रूप से विकसित हो रही है, जो विद्यालयी शिक्षा में GenAI के लिए विशेष रूप से निर्धारित हो।

विद्यालयों में GenAI के पक्ष में तर्क

- **व्यक्तिगत अधिगम:** एआई बच्चे के सीखने के स्तर के अनुसार वैकल्पिक व्याख्याएँ प्रदान कर सकता है।
- **शिक्षक की क्षमता में वृद्धि:** कोई शिक्षक एआई से भिन्न जैसी कठिन अवधारणाओं को समझाने के लिए दृश्यात्मक या गतिविधि-आधारित तरीकों के बारे में पूछ सकता है।

- **संसाधन निर्माण:** एआई पाठ योजनाएँ, प्रस्तुति सामग्री, कहानियाँ, कार्यपत्रक और मूल्यांकन तैयार करके तैयारी में लगने वाले समय को कम करता है।
- **समावेशन:** अनुवाद और अनुकूलनशील उपकरण विभिन्न आवश्यकताओं वाले बच्चों के लिए शैक्षिक सामग्री को सुलभ बना सकते हैं।
- **संसाधन संबंधी अंतर को पाटना:** ग्रामीण विद्यालयों में, जहाँ विशेषज्ञ संसाधन सीमित हैं, एआई शिक्षकों के पूरक के रूप में सहायता कर सकता है।
- मुख्य सिद्धांत यह है कि एआई को शिक्षक की क्षमता का विस्तार करना चाहिए, शिक्षक का स्थान नहीं लेना चाहिए।
- विद्यालय केवल ज्ञान के केंद्र नहीं हैं; वे ऐसे स्थान हैं जहाँ बच्चे सहानुभूति, विवेक, सहयोग और जिम्मेदार इंसान बनना सीखते हैं।

अनियंत्रित उपयोग के विरुद्ध तर्क

- **अत्यधिक निर्भरता:** यदि कोई बच्चा अपना गृहकार्य सीधे चैटजीपीटी में डालकर उत्तर की नकल करता है और उसे जमा कर देता है, तो बच्चा प्रयास, त्रुटि और तर्क-विचार की महत्वपूर्ण प्रक्रिया से वंचित हो जाता है।
- अधिगम अक्सर 'सीमांत अवस्था' में होता है, अर्थात् न जानने और समझने के बीच की अवस्था में, जहाँ विचार विकसित होने के लिए रचनात्मक संघर्ष की प्रक्रिया से गुजरते हैं।
- अत्यधिक तकनीकी सहायता एआई को संज्ञानात्मक बैसाखी में बदल सकती है।
- अन्य चिंताओं में शामिल हैं:
 - मनगढ़ंत या तथ्यात्मक रूप से गलत उत्तर;
 - स्वतंत्र समस्या-समाधान और रचनात्मकता का कमजोर होना;
 - साहित्यिक चोरी और मूल्यांकन की शैक्षणिक ईमानदारी से जुड़ी समस्याएँ;
 - एल्गोरिथम और भाषाई पूर्वाग्रह;
 - बच्चों के आँकड़ों का संग्रह और दुरुपयोग;
 - असमान पहुँच, जिससे डिजिटल विभाजन और बढ़ सकता है।
- इसलिए, मुद्दा केवल एआई बनाम बिना एआई का नहीं है, बल्कि यह है कि संज्ञानात्मक कार्य का कितना हिस्सा बच्चे के पास रहना चाहिए।

भारत के लिए विशिष्ट चिंताएँ

- भारत को अपने डिजिटल विभाजन, बहुभाषी वातावरण, शिक्षकों की असमान क्षमता तथा ग्रामीण-शहरी असमानताओं को ध्यान में रखने की आवश्यकता है।
- मुख्य रूप से वैश्विक आँकड़ों पर प्रशिक्षित एआई उपकरण भारतीय उच्चारणों, भाषाओं या स्थानीय संदर्भों के साथ खराब प्रदर्शन कर सकता है।
- इसके अलावा, शिक्षकों के स्थान पर एआई को अनुमति देना असमानता को हल करने के बजाय उसे संस्थागत रूप दे सकता है।

- निजता संबंधी सुरक्षा उपाय विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं क्योंकि बच्चों के शैक्षिक और व्यवहार संबंधी आँकड़े संवेदनशील होते हैं।

संबंधित प्रयास और पहल

- यूनेस्को का शिक्षा और अनुसंधान में जनरेटिव एआई संबंधी मार्गदर्शन मानव-केंद्रित विनियमन, आँकड़ा संरक्षण और आयु-उपयुक्त उपयोग की वकालत करता है।
- ओईसीडी का डिजिटल शिक्षा आउटलुक 2026 भी उद्देश्यपूर्ण और शैक्षणिक रूप से सुदृढ़ डिजिटल परिवर्तन पर जोर देता है।
- भारत में, राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020, राष्ट्रीय डिजिटल शिक्षा वास्तुकला (NDEAR) तथा एआई साक्षरता और डिजिटल अधिगम से संबंधित पहलें प्रौद्योगिकी-सक्षम शिक्षा के लिए आधार प्रदान करती हैं।
- सरकारी एआई प्रायोगिक कार्यक्रम स्थानीय परिस्थितियों के अनुकूल सुरक्षा उपाय विकसित करने के लिए उपयोगी प्रयोगशालाओं के रूप में कार्य कर सकते हैं।

आगे की राह

- पूर्ण प्रतिबंध न तो व्यावहारिक है और न ही आवश्यक रूप से वांछनीय। चूँकि बच्चे घर पर खोज इंजन, ईमेल, खेलों और इंटरनेट के माध्यम से एआई के संपर्क में आते हैं, इसलिए विद्यालयों को ऐसे स्थान बनना चाहिए जहाँ वे एआई पर प्रश्न उठाना, जानकारी का सत्यापन करना और उसका जिम्मेदारीपूर्वक उपयोग करना सीखें।
- भारत को आयु-आधारित और जोखिम-आधारित ढाँचा अपनाना चाहिए: प्रारंभिक प्राथमिक कक्षाओं के लिए अधिक कठोर प्रतिबंध; उच्च कक्षाओं में निगरानी के साथ और विशिष्ट उद्देश्यों के लिए उपयोग; शिक्षकों द्वारा अनिवार्य सत्यापन; निजता को ध्यान में रखकर व्यवस्था; एआई-साक्षरता का पाठ्यक्रम; और ऐसे मूल्यांकन जो केवल अंतिम उत्तर के बजाय सोचने की प्रक्रिया को महत्व दें।
- कक्षा में एक उपयोगी नियम हो सकता है: 'पहले सोचो, दूसरे चरण में लिखो, अंत में एआई से सत्यापन करवाओ।'।
- उद्देश्य बच्चों को एआई से दूर रखना नहीं होना चाहिए, बल्कि यह सुनिश्चित करना होना चाहिए कि एआई बच्चे के हाथों में एक उपकरण बना रहे, बच्चे के मस्तिष्क या शिक्षक के विवेक का विकल्प न बने।

दैनिक मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

प्रश्न: क्या भारत को विद्यालयी शिक्षा में जनरेटिव एआई पर प्रतिबंध लगाना चाहिए, इसे विनियमित करना चाहिए या एकीकृत करना चाहिए? आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

स्रोत: TH

